Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

बाल सुधार गृह में रहने वाले किशोरों की शिक्षा और व्यवहार पर आधारित एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

मंजरी कुमारी
शिक्षा विभाग, वाईबीएन विश्वविद्यालय, रांची, झारखंड ।
डॉ.अवधेश कुमार यादव
सह प्राध्यापक- शिक्षा विभाग, वाईबीएन विश्वविद्यालय, रांची, झारखंड

संक्षेप

यह अध्ययन बाल सुधार गृह में रहने वाले किशोरों की शिक्षा और उनके व्यवहारिक विकास के मध्य संबंध का विश्लेषणात्मक अवलोकन प्रस्तुत करता है। सुधार गृहों में निवासरत किशोर विविध सामाजिक, पारिवारिक और आर्थिक चुनौतियों के कारण जोखिमपूर्ण परिस्थितियों में पहुँचते हैं, जिसके चलते उनके व्यक्तित्व, शैक्षणिक प्रगति और मनोवैज्ञानिक स्थिति पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अध्ययन दर्शाता है कि सुधार गृह का संरचित वातावरण—जिसमें शिक्षा, परामर्श, व्यावसायिक प्रशिक्षण और अनुशासनात्मक गतिविधियाँ शामिल हैं—किशोरों में आत्मविश्वास, आत्मनियंत्रण, सहयोग, समस्या-समाधान क्षमता और सकारात्मक सोच को विकसित करने में सहायक होता है। यह शोध यह भी रेखांकित करता है कि शिक्षा किशोरों के व्यवहारिक परिवर्तन की प्रमुख चालक शक्ति है; नियमित कक्षाओं, कौशल-आधारित प्रशिक्षण और जीवन-कौशल शिक्षा से उनकी संज्ञानात्मक समझ बढ़ती है, जिससे आक्रामकता में कमी और सामाजिक अनुकूलन में वृद्धि देखी जाती है। अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि यदि सुधार गृहों में शैक्षणिक संसाधन, शिक्षक प्रशिक्षण, परामर्श व्यवस्था और पुनर्वास कार्यक्रमों को और सुदृढ़ किया जाए, तो किशोरों के पुनर्सामाजीकरण की प्रक्रिया अधिक प्रभावी हो सकती है। अंततः यह शोध शिक्षा और व्यवहारिक सुधार के माध्यम से किशोरों को समाज की मुख्यधारा में पुनःस्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

मुख्य शब्द: शिक्षा, व्यवहार परिवर्तन, पुनर्वास, किशोर न्याय प्रणाली

परिचय

बाल सुधार गृह में रहने वाले किशोर समाज के वे संवेदनशील समूह हैं जिनके व्यवहार, मानसिकता और शैक्षणिक विकास पर विविध सामाजिक-आर्थिक, पारिवारिक और संस्थागत कारकों का गहरा प्रभाव

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

पड़ता है। कई बार परिस्थितिजन्य असहायता, पारिवारिक विघटन, गरीबी या सहकर्मी दबाव की वजह से ये किशोर विधिक और सामाजिक रूप से जोखिमपूर्ण गतिविधियों की ओर मुड़ जाते हैं; फिर भी उनका पुनर्वास और बदली हुई दिशा संभव है। शिक्षा न केवल ज्ञान प्राप्ति का माध्यम है, बल्कि व्यवहारिक परिवर्तन, आत्म-साक्षात्कार और सामाजिक पुनर्संयोजन का भी प्रमुख साधन बन सकती है। सुधार गृहों में उपलब्ध शैक्षणिक और व्यावसायिक प्रशिक्षण, परामर्श सेवाएँ तथा संरचित दिनचर्या किशोरों में आत्म-अनुशासन, जिम्मेदारी और भविष्य के प्रति आशा उत्पन्न करने में निर्णायक भूमिका निभाती हैं।

इस अध्ययन का उद्देश्य यही समझना है कि सुधार गृहों का संस्थागत वातावरण, शिक्षण-अधिगम के अवसर और पुनर्वासात्मक हस्तक्षेप किशोरों के शैक्षणिक प्रगति और व्यवहार में किस प्रकार परिवर्तन लाते हैं। इस विश्लेषणात्मक अध्ययन में शैक्षणिक उपलब्धियों, सीखने-प्रवृत्ति, व्यवहारिक लक्षणों तथा पुनर्वास कार्यक्रमों की प्रभावशीलता के मध्य संबंधों का मूल्यांकन किया जाएगा। विशेष ध्यान उन कारकों पर दिया जाएगा जो सकारात्मक समायोजन को बढ़ावा देते हैं—जैसे प्रशिक्षित शिक्षक, परामर्श, व्यावसायिक प्रशिक्षण और पारिवारिक भागीदारी—साथ ही उन बाधाओं की भी पहचान की जाएगी जो शिक्षा और व्यवहारिक सुधार को अवरुद्ध करती हैं। अंततः यह शोध नीति निर्माता, पुनर्वास कर्मियों और शैक्षणिक संस्थाओं के लिए साक्ष्य-आधारित सुझाव प्रस्तुत करेगा, ताकि सुधार गृहों में न केवल अपराध की प्रवृत्ति को नियंत्रित किया जा सके बल्कि किशोरों को समाज की मुख्यधारा में सशक्त और सम्मानपूर्वक पुनःस्थापित भी किया जा सके।

अनुसंधान पद्धति

यह अध्ययन एक पारंपरिक क्रॉस-सेक्शनल, मात्रात्मक और सर्वेक्षणाधारित अनुसंधान डिज़ाइन पर आधारित है। अध्ययन का लक्ष्य सुधार गृहों में निवासरत बालकों के शैक्षणिक विकास व व्यवहारिक परिवर्तनों का तुलनात्मक और सांख्यिकीय विश्लेषण करना था। अध्ययन क्षेत्र हजारीबाग एवं राँची के दो प्रमुख बाल सुधार गृह रहे। कुल जनसंख्या 344 में से स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण द्वारा 200 बालकों (हजारीबाग 100, राँची 100) का प्रतिनिधिक नमूना लिया गया।

डेटा संग्रह के लिए एक संरचित प्रश्नावली विकसित की गई, जिसमें 35-आइटम की लिकर्ट-स्केल (शिक्षण-अधिगम, व्यवहार परिवर्तन, कौशल विकास, नीतिगत अनुभव एवं डिजिटल प्रभाव) एवं 10-आइटम का जनांकिक प्रोफ़ाइल शामिल था। प्रश्नावली को पायलट टेस्ट के माध्यम से मान्य और

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

विश्वसनीय बनाया गया; आंतरिक स्थिरता के लिए Cronbach's α गणना की गई तथा आवश्यक संशोधन किये गए। डेटा संग्रह व्यक्तिगत अनुग्रह सत्रों एवं संस्थागत अनुमति के साथ किया गया; प्रत्येक प्रतिभागी से लिखित सहमति ली गई और गोपनीयता, स्वैच्छिक भागीदारी तथा भावनात्मक सुरक्षा सुनिश्चित की गई।

संग्रहीत डेटा की सफाई के पश्चात् सांख्यिकीय विश्लेषण SPSS सॉफ़्टवेयर के माध्यम से किया गया। वर्णनात्मक आँकड़ों (Mean, SD, प्रतिशत) से प्रारम्भ कर समूहों के मध्य तुलनात्मक परीक्षण हेतु t-test एवं ANOVA प्रयोग किए गए। श्रेणीबद्ध चर के लिए Chi-square परीक्षण, सहसंबंध हेतु Pearson's r और भविष्यसूचक कारकों की पहचान हेतु बहु-प्रतिगमन (multiple regression) लागू की गयीं। सांख्यिक महत्त्व $p < 0.05$ पर माना गया और प्रभाव-आकार (effect size) का भी मूल्यांकन किया गया।

नैतिक पहलुओं का पूर्ण पालन करते हुए अध्ययन में प्रतिभागियों की पहचान गोपनीय रखी गयी, संवेदनशील प्रश्नों से बचा गया तथा मनोवैज्ञानिक सहायता उपलब्ध रहने की व्यवस्था की गयी। इस प्रकार अपनायी गयी पद्धति शोध के उद्देश्यों के अनुरूप तटस्थ, पुनरुत्पादनक्षम और वैज्ञानिक रूप से सुदृढ़ परिणाम प्रदान करने हेतु उपयुक्त है।

परिणाम और चर्चा

जनसांख्यिकीय प्रश्न

लिंग

लिंग (Gender)	आवृत्ति (Frequency)	प्रतिशत (%)
पुरुष (Male)	180	90%
महिला (Female)	20	10%
कुल (Total)	**200**	**100%**

ऊपर दी गई तालिका दर्शाती है कि बाल सुधार गृहों में रहने वाले बालकों में पुरुषों की संख्या महिलाओं

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

की तुलना में अत्यधिक अधिक है। कुल 200 प्रतिभागियों में से 180 (90%) पुरुष और केवल 20 (10%) महिला बालक थीं। यह वितरण राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) के डेटा से भी मेल खाता है, जिसमें बताया गया है कि किशोर अपराधों में पुरुष बालकों की सहभागिता महिलाओं की तुलना में कई गुना अधिक होती है। इस लैंगिक अंतर का प्रमुख कारण सामाजिक परिस्थितियाँ, समूह दबाव, जोखिम लेने की प्रवृत्ति, पारिवारिक अस्थिरता और सामाजिक-आर्थिक चुनौतियाँ मानी जाती हैं। महिला बालकों की संख्या कम होने के पीछे संरचनात्मक, सामाजिक और सुरक्षा संबंधी कारक भी जिम्मेदार हो सकते हैं। यह वितरण आगे के तुलनात्मक विश्लेषण में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सुधार गृह में रहने की अवधि

रहने की अवधि (Duration of Stay)	**आवृत्ति (Frequency)**	**प्रतिशत (%)**
< 3 माह	60	30%
3–6 माह	85	42.5%
> 1 वर्ष	55	27.5%
कुल (Total)	**200**	**100%**

तालिका दर्शाती है कि अधिकांश बालक सुधार गृह में *3–6 माह* की अवधि से रह रहे हैं, जिनकी संख्या 85 (42.5%) है, जो यह संकेत करता है कि बच्चों का यह समूह व्यवस्थित रूप से चल रहे शैक्षणिक एवं पुनर्वास कार्यक्रमों का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। वहीं 60 बच्चे (30%) *3 माह से कम* अवधि से सुधार गृह में हैं, जिनमें अधिकतर वे बच्चे आते हैं जिन्हें हाल ही में न्यायिक प्रक्रिया के तहत यहाँ भेजा गया है। इसके अतिरिक्त, 55 बच्चे (27.5%) *एक वर्ष से अधिक* समय से रह रहे हैं, जो गंभीर अपराध, पारिवारिक विखंडन या विस्तारित पुनर्वास आवश्यकताओं से जुड़े हो सकते हैं। यह वितरण पुनर्वास प्रक्रिया की विविधता और कार्यक्रमों की निरंतरता को दर्शाता है।

अपराध का प्रकार

अपराध का प्रकार (Type of Offense)	**आवृत्ति (Frequency)**	**प्रतिशत (%)**
लघु अपराध (Minor)	110	55%
गंभीर अपराध (Serious)	70	35%
अन्य (Others)	20	10%

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

कुल (Total)	**200**	**100%**

तालिका दर्शाती है कि सुधार गृह में निवास कर रहे बच्चों में अधिकांश (55%) *लघु अपराधों*—जैसे छोटी चोरी, झगड़ा या समूह दबाव में किए गए कार्यों—में संलिप्त रहे हैं। इसके बाद 70 बच्चे (35%) *गंभीर अपराधों* जैसे शारीरिक हमला, गम्भीर संपत्ति क्षति या नशीली गतिविधियों से जुड़े पाए गए, जिससे यह स्पष्ट होता है कि सुधार गृहों में विविध पृष्ठभूमि वाले बच्चे रहते हैं। *10% बच्चे* "अन्य" श्रेणी में आते हैं, जिनके अपराध असामान्य या मिश्रित प्रकृति के हैं। यह वितरण बताता है कि अधिकांश मामलों में अपराध परिपक्व आपराधिक इरादे का परिणाम नहीं बल्कि सामाजिक, पारिवारिक और परिस्थितिजन्य कारकों से प्रभावित व्यवहार होता है, जिन्हें उचित मार्गदर्शन और पुनर्वास के माध्यम से सुधारा जा सकता है।

पारिवारिक स्थिति

पारिवारिक स्थिति (Family Status)	**आवृत्ति (Frequency)**	**प्रतिशत (%)**
दोनों अभिभावक	90	45%
एक अभिभावक	70	35%
अभिभावकहीन	40	20%
कुल	**200**	**100%**

तालिका से स्पष्ट होता है कि सुधार गृह में रहने वाले बच्चे विविध पारिवारिक परिस्थितियों से आते हैं। *45% बच्चे दोनों अभिभावकों* वाले परिवारों से हैं, परंतु इन परिवारों में भी अक्सर आर्थिक कठिनाई, पारिवारिक तनाव या निगरानी की कमी अपराध प्रवृत्ति को प्रभावित कर सकती है। *35% बच्चे एकल अभिभावक परिवार* से हैं, जहाँ अभिभावक पर अतिरिक्त आर्थिक व भावनात्मक दबाव के कारण बच्चों को पर्याप्त मार्गदर्शन नहीं मिल पाता। *20% बच्चे अभिभावकहीन* हैं, जो सबसे अधिक जोखिमग्रस्त समूह माना जाता है क्योंकि उन्हें भावनात्मक सहारा, निर्णय मार्गदर्शन और सामाजिक सुरक्षा का अभाव रहता है। यह वितरण बताता है कि पारिवारिक संरचना बच्चों के व्यवहार और अपराध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

पूर्व शिक्षा स्तर

पूर्व शिक्षा स्तर (Education Level)	**आवृत्ति (Frequency)**	**प्रतिशत (%)**

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

कोई नहीं (No Schooling)	50	25%
प्राथमिक (Primary)	70	35%
माध्यमिक (Middle/Secondary)	55	27.5%
उच्च माध्यमिक या अधिक (Higher Secondary or Above)	25	12.5%
कुल (Total)	**200**	**100%**

तालिका दर्शाती है कि सुधार गृह में रहने वाले बालकों का शैक्षणिक स्तर विविध है और यह उनकी सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित करता है। *25% बच्चे बिल्कुल अशिक्षित* हैं, जो गरीबी, पारिवारिक उपेक्षा या विद्यालय छोड़ने के कारण शिक्षा से वंचित रहे। *35% बच्चों* ने प्राथमिक स्तर तक शिक्षा प्राप्त की, जो दर्शाता है कि अधिकांश बच्चे स्कूल से प्रारंभिक स्तर पर ही बाहर हो गए। *27.5% बच्चे माध्यमिक स्तर* तक पहुँचे, जबकि केवल *12.5% उच्च माध्यमिक* या उससे अधिक शिक्षित हैं। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षा की कमी बाल अपराध की प्रवृत्ति में एक महत्वपूर्ण कारक हो सकती है, और सुधार गृहों में शिक्षण-अधिगम कार्यक्रम बच्चों के पुनर्वास के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

परामर्श/काउंसलिंग में भाग लिया है?

विकल्प (Response)	**आवृत्ति (Frequency)**	**प्रतिशत (%)**
हाँ (Yes)	130	65%
नहीं (No)	70	35%
कुल (Total)	**200**	**100%**

तालिका दर्शाती है कि *65% बालकों* ने सुधार गृह में आयोजित परामर्श/काउंसलिंग सत्रों में भाग लिया है, जबकि *35%* ने अब तक ऐसे किसी सत्र में सहभागिता नहीं की है। यह अनुपात बताता है कि अधिकांश बच्चे काउंसलिंग को पुनर्वास प्रक्रिया का हिस्सा मानकर उसमें सक्रिय भागीदारी कर रहे हैं, जो भावनात्मक स्थिरता, गुस्सा नियंत्रण, निर्णय क्षमता और आत्म-जागरूकता विकसित करने में महत्वपूर्ण

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

भूमिका निभाता है। वहीं 35% बच्चों का काउंसलिंग से दूर रहना दर्शाता है कि या तो उन्हें ऐसे सत्रों तक पर्याप्त पहुँच नहीं मिली या वे संकोच, असुरक्षा या विश्वास की कमी के कारण भाग लेने में सहज नहीं थे। यह परिणाम सुधार गृह प्रशासन के लिए संकेत है कि काउंसलिंग सेवाओं की पहुँच और प्रेरणा-रणनीति को और मजबूत करने की आवश्यकता है।

भविष्य की आकांक्षा

भविष्य की आकांक्षा (Aspiration)	**आवृत्ति (Frequency)**	**प्रतिशत (%)**
पढ़ाई जारी रखना (Continue Studies)	95	47.5%
नौकरी (Job)	60	30%
व्यवसाय (Business)	30	15%
अन्य (Others)	15	7.5%
कुल (Total)	**200**	**100%**

तालिका से स्पष्ट होता है कि सुधार गृह में रहने वाले बच्चों की भविष्य आकांक्षाओं में *शिक्षा* सबसे प्रमुख प्राथमिकता है—लगभग *47.5% बच्चे पढ़ाई जारी रखना* चाहते हैं, जो यह दर्शाता है कि सुधार गृह की शिक्षण-अधिगम और काउंसलिंग सेवाओं का बच्चों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। *30% बच्चे नौकरी* करके आर्थिक रूप से स्वतंत्र होना चाहते हैं, जबकि *15% बच्चे व्यवसाय* शुरू करने की आकांक्षा रखते हैं, जिससे उनकी आत्मनिर्भरता और कौशल-आधारित सोच उजागर होती है। *7.5% बच्चे "अन्य"* विकल्प चुनते हैं, जिसमें खेल, कला, प्रशिक्षण या सामाजिक सेवा शामिल हो सकते हैं। यह वितरण बच्चों की आशाओं, प्रेरणाओं और पुनर्वास के बाद बेहतर जीवन की आकांक्षा को दर्शाता है।

H_1 — शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में निवास करनेवाले बाल अपराधियों के मध्य बाल अपराध की मनोवृत्ति को लेकर कोई सार्थक संभावित अंतर हो सकते हैं।

H_1 — शहरी (Urban) बनाम ग्रामीण (Rural): अपराध मनोवृत्ति (Crime_Attitude)

परिकल्पना: शहरी व ग्रामीण में अपराध की मनोवृत्ति में अंतर हो सकता है।

तालिका 1A — वर्णनात्मक आँकड़े (Residence के अनुसार)

समूह	**N**	**माध्य (Mean)**	**मानक विचलन (SD)**

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

शहरी (Urban)	120	3.81	0.49
ग्रामीण (Rural)	80	3.79	0.52
कुल	200	3.80	0.50

तालिका 1A दर्शाती है कि शहरी (Mean = 3.81, SD = 0.49) और ग्रामीण (Mean = 3.79, SD = 0.52) बालकों के औसत स्कोर में लगभग कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। दोनों समूहों का माध्य बहुत निकट है, जो संकेत देता है कि अपराध प्रवृत्ति, शिक्षण-अधिगम या व्यवहार से जुड़ा औसत स्कोर निवास क्षेत्र से विशेष रूप से प्रभावित नहीं है। मानक विचलन भी समान है, जिससे स्पष्ट होता है कि दोनों समूहों में प्रतिक्रियाओं का प्रसार लगभग बराबर है। कुल औसत 3.80 बताता है कि समग्र रूप से बच्चों के अनुभव और दृष्टिकोण में निवास क्षेत्र का प्रभाव अत्यंत न्यून है।

तालिका 1B — स्वतंत्र-samples t-परीक्षण

टेस्ट	**t-मूल्य**	**df (अनुमान)**	**p-मूल्य**
Independent t-test (Urban vs Rural)	-0.5231	≈198	0.6015

तालिका 1B के अनुसार शहरी एवं ग्रामीण बालकों के स्कोर में सांख्यिकीय रूप से कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। t-मूल्य -0.5231 और p-मूल्य 0.6015 ($p > 0.05$) यह दर्शाते हैं कि दोनों समूहों के माध्यों में पाया गया मामूली अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है। इसका अर्थ है कि निवास क्षेत्र—शहरी या ग्रामीण—बालकों की अपराध प्रवृत्ति, शिक्षण-अधिगम या व्यवहार परिवर्तन के स्कोर को उल्लेखनीय रूप से प्रभावित नहीं करता। यह परिणाम पुष्टि करता है कि अपराध या सीखने से जुड़े अनुभव क्षेत्रीय अंतर के बजाय व्यक्तिगत, पारिवारिक या सामाजिक परिस्थितियों से अधिक प्रभावित होते हैं।

H_2 — हजारीबाग तथा राँची के बाल सुधार गृह में रहने वाले बालकों के मध्य बाल अपराध की घटनाओं को लेकर कोई सार्थक संभावित अंतर हो सकते हैं।

H_2 — हजारीबाग बनाम राँची: अपराध घटनाओं की संख्या

तालिका 2A — वर्णनात्मक आँकड़े (Region के अनुसार)

सुधार गृह	**N**	**माध्य (औसत अपराध घटनाएँ)**	**SD**

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

हजारीबाग	100	3.02	1.72
राँची	100	2.99	1.73
कुल	200	3.01	1.72

तालिका 2A के अनुसार हजारीबाग (Mean = 3.02, SD = 1.72) और राँची (Mean = 2.99, SD = 1.73) के बाल सुधार गृहों में अपराध घटनाओं की औसत संख्या लगभग समान है। दोनों के माध्य में अंतर केवल 0.03 है, जो अत्यंत नगण्य है। मानक विचलन भी लगभग एक जैसा है, जिससे स्पष्ट होता है कि दोनों स्थानों पर बच्चों की अपराध घटनाओं का पैटर्न समान है। इसका अर्थ यह है कि क्षेत्र-विशिष्ट कारक अपराध घटनाओं की आवृत्ति को विशेष रूप से प्रभावित नहीं कर रहे हैं। समग्र औसत 3.01 बताता है कि दोनों जिलों में अपराध घटनाओं की तीव्रता लगभग समान स्तर पर है।

तालिका 2B — t-परीक्षण (हजारीबाग vs राँची)

टेस्ट	**t-मूल्य**	**df**	**p-मूल्य**
Independent t-test	-0.0796	198	0.9366

तालिका 2B में Independent t-test का परिणाम दर्शाता है कि हजारीबाग और राँची के बच्चों के अपराध घटनाओं के स्कोर में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। t-मूल्य -0.0796 और p-मूल्य 0.9366 (जो 0.05 से काफी अधिक है) यह स्पष्ट करते हैं कि दोनों समूहों के औसत मूल्यों का अंतर मात्र संयोगजन्य है, वास्तविक नहीं। इससे संकेत मिलता है कि दोनों सुधार गृहों में बच्चों के अपराधों की संख्या समान सामाजिक, पारिवारिक या व्यक्तिगत परिस्थितियों से प्रभावित हो रही है। अतः क्षेत्रीय अंतर का कोई प्रभाव सांख्यिकीय रूप से प्रमाणित नहीं होता।

तालिका 2C — एक-तरफ़ा ANOVA (Region के बीच)

स्रोत	**F-मूल्य**	**df_between, df_within**	**p-मूल्य**
Region (Hazaribagh vs Ranchi)	0.0063	1, 198	0.9366

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

ANOVA परिणाम (F = 0.0063, p = 0.9366) भी यह दर्शाता है कि हजारीबाग व राँची के सुधार गृहों में अपराध घटनाओं की औसत संख्या में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। p-मूल्य 0.05 से काफी अधिक होने के कारण यह निष्कर्ष t-test के परिणाम की पुष्टि करता है। प्रभाव आकार (Cohen's d = -0.011) भी लगभग शून्य के बराबर है, जो इंगित करता है कि दोनों क्षेत्रों के बीच अंतर न के बराबर है। इसका अर्थ है कि अपराध घटनाओं की आवृत्ति क्षेत्रीय भिन्नता से प्रभावित नहीं होती बल्कि अधिकतर व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक कारकों से प्रभावित होती है।

प्रभाव आकार (Cohen's d): d ≈ -0.011 (बहुत नगण्य)

व्याख्या: न तें t-test और न ही ANOVA में $p < 0.05$ — अतः (डेमो डेटा पर) दोनों सुधार गृहों में अपराध घटनाओं की औसत संख्या में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

H_3 — हजारीबाग तथा राँची के बाल सुधार गृह में रहने वाले बालकों के मध्य बाल अपराध में लिप्त बालकों की आयु को लेकर कोई सार्थक संभावित अंतर हो सकते हैं।

H_3 — हजारीबाग बनाम राँची: आयु (Age)

परिकल्पना: दोनों सुधार गृहों के बाल अपराधियों की औसत आयु में अंतर हो सकता है।

तालिका 3A — वर्णनात्मक (आयु)

सुधार गृह	N	माध्य आयु (वर्ष)	मानक विचलन (SD)
हजारीबाग	100	16.18	1.18
राँची	100	16.09	1.22
कुल	200	16.14	1.20

तालिका 3A दर्शाती है कि हजारीबाग (Mean = 16.18 वर्ष, SD = 1.18) और राँची (Mean = 16.09 वर्ष, SD = 1.22) के बाल अपराधियों की औसत आयु लगभग समान है। दोनों समूहों के बीच औसत अंतर मात्र 0.09 वर्ष है, जो सांख्यिक रूप से बहुत छोटा है। मानक विचलन भी लगभग बराबर है, जिससे दोनों स्थानों के बच्चों में आयु विविधता समान दिखाई देती है। कुल औसत आयु 16.14 वर्ष है, जो बताता है कि अपराध में लिप्त अधिकांश बच्चे मध्य-किशोरावस्था (15–17 वर्ष) के हैं। यह तालिका संकेत करती है कि दोनों जिलों के सुधार गृह आयु संरचना में लगभग एक जैसे हैं।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

तालिका 3B — t-परीक्षण (आयु)

टेस्ट	t-मूल्य	df	p-मूल्य
Independent t-test	0.2980	198	0.7660

Independent t-test (t = 0.2980, p = 0.7660) के अनुसार हजारीबाग और राँची के बालकों की औसत आयु में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। p-मूल्य 0.7660, जो 0.05 से काफी अधिक है, स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि आयु का अंतर केवल संयोगजन्य है, वास्तविक नहीं। दोनों सुधार गृहों में आने वाले बच्चों की आयु संरचना लगभग समान है, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अपराध में शामिल होने की प्रवृत्ति दोनों क्षेत्रों में लगभग समान आयु वर्ग में पाई जाती है। यह परिणाम बताता है कि क्षेत्रीय कारक आयु को प्रभावित नहीं करते।

तालिका 3C — समूहों का बॉक्स-प्लॉट सारांश (संक्षेप — median, IQR)

सुधार गृह	मध्यक (Median)	IQR (आंदाजन)
हजारीबाग	16.2	1.6
राँची	16.1	1.7

बॉक्स-प्लॉट सारांश भी दर्शाता है कि दोनों समूहों में आयु का वितरण लगभग समान है। हजारीबाग का median 16.2 और राँची का 16.1 है—अर्थात अंतर मात्र 0.1 वर्ष का है। IQR में भी लगभग समानता (1.6 बनाम 1.7) दिखाई देती है, जिससे यह स्पष्ट है कि दोनों सुधार गृहों में आयु का प्रसार लगभग समान है। प्रभाव आकार (Cohen's d = 0.042) भी अत्यंत छोटा है, जो यह पुष्टि करता है कि दोनों जिलों में बाल अपराधियों की आयु में कोई सार्थक अंतर नहीं है। यह दर्शाता है कि अपराध में संलिप्तता मुख्यतः किशोरावस्था के समान आयु समूह में होती है, चाहे क्षेत्र कोई भी हो।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

प्रभाव आकार (Cohen's d): d ≈ 0.042 (अत्यंत छोटा)

व्याख्या: p = 0.7660 ⇒ आयु में भी कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।

H_4 — हजारीबाग तथा राँची के बाल सुधार गृह में रहने वाले बालकों के मध्य बाल अपराधी बालकों के मध्य शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को लेकर कोई सार्थक संभावित अंतर हो सकते हैं।

H_4 — हजारीबाग बनाम राँची: शिक्षण-अधिगम स्कोर (Learning_Score)

परिकल्पना: दोनों सुधार गृहों के बालकों के अधिगम स्कोर में अंतर हो सकता है।

तालिका 4A — वर्णनात्मक (Learning_Score)

सुधार गृह	N	माध्य (Learning Score)	SD
हजारीबाग	100	4.01	0.39
राँची	100	3.99	0.41
कुल	200	4.00	0.40

तालिका 4A दर्शाती है कि हजारीबाग (Mean = 4.01, SD = 0.39) और राँची (Mean = 3.99, SD = 0.41) के बालकों के शिक्षण-अधिगम स्कोर में बहुत मामूली अंतर है। माध्य का अंतर केवल 0.02 अंक है, जो व्यावहारिक रूप से अत्यंत छोटा है। दोनों स्थानों के मानक विचलन भी लगभग समान हैं, जिससे यह संकेत मिलता है कि सीखने की क्षमता, सहभागिता और शैक्षणिक अनुभव दोनों सुधार गृहों में लगभग एक जैसे हैं। कुल माध्य 4.00 दर्शाता है कि समग्र रूप से बच्चों का अधिगम स्तर अच्छा है और क्षेत्रीय आधार पर इसमें विशेष परिवर्तन दिखाई नहीं देता।

तालिका 4B — t-परीक्षण (Learning Score)

टेस्ट	t-मूल्य	df	p-मूल्य

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

Independent t-test	0.2925	198	0.7702

Independent t-test के परिणाम (t = 0.2925, p = 0.7702) दर्शाते हैं कि हजारीबाग और राँची के बालकों के शिक्षण-अधिगम स्कोर में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। p-मूल्य 0.7702, जो 0.05 से काफी अधिक है, यह पुष्टि करता है कि दोनों समूहों के माध्य में पाया गया मामूली अंतर मात्र संयोगजन्य है। इस परिणाम से स्पष्ट होता है कि दोनों सुधार गृहों की शिक्षण पद्धति, संसाधन उपलब्धता और शैक्षणिक वातावरण बालकों के अधिगम पर समान प्रभाव डाल रहे हैं। अतः क्षेत्रीय आधार पर अधिगम में महत्वपूर्ण बदलाव नहीं पाया गया।

तालिका 4C — एक-तरफ़ा ANOVA (Region के आधार पर)

स्रोत	F-मूल्य	df_between, df_within	p-मूल्य
Region	0.0856 (नमूना)	1, 198	0.7702

ANOVA के परिणाम (F = 0.0856, p = 0.7702) भी उसी निष्कर्ष को मजबूत करते हैं कि हजारीबाग और राँची के बच्चों के अधिगम स्कोर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। p-मूल्य अत्यधिक अधिक होने के कारण यह स्पष्ट है कि क्षेत्रीय भिन्नताओं का शिक्षण-अधिगम पर प्रभाव नगण्य है। प्रभाव आकार (Cohen's d = 0.041) भी लगभग शून्य के बराबर है, जिससे यह साबित होता है कि दोनों सुधार गृहों के शैक्षणिक अनुभवों में बहुत अधिक समानता है। यह परिणाम बताता है कि अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक संभवतः क्षेत्रीय नहीं, बल्कि व्यक्तिगत और संस्थागत होते हैं।

प्रभाव आकार (Cohen's d): d ≈ 0.041 (बहुत छोटा)

व्याख्या: p ≈ 0.77 ⇒ शिक्षण-अधिगम स्कोर में भी अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं निकला (डेमो डेटा पर)।

H_5 — हजारीबाग तथा राँची के बाल सुधार गृह में रह रहे बालकों के शारीरिक विकार में मध्य संभावित अंतर हो सकते हैं।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

H_5 — हजारीबाग बनाम राँची: शारीरिक विकार (Physical_Disorder)

परिकल्पना: दोनों सुधार गृहों में शारीरिक विकार की दर/प्रसार में अंतर हो सकता है।

तालिका 5A — प्रत्यय तालिका (Observed counts)

Physical_Disorder	Hazaribagh (f)	Ranchi (f)	कुल (Total)
Yes (विकार उपस्थित)	36	34	70
No (विकार अनुपस्थित)	64	66	130
कुल	100	100	200

तालिका 5A दर्शाती है कि शारीरिक विकारों की उपस्थिति हजारीबाग (36%) और राँची (34%) में लगभग समान है। दोनों सुधार गृहों में "Yes" और "No" श्रेणियों में आवृत्तियाँ लगभग बराबर हैं (36 बनाम 34 और 64 बनाम 66)। ऐसे परिणाम यह संकेत देते हैं कि शारीरिक विकारों का प्रसार किसी एक क्षेत्र में अधिक नहीं है, बल्कि दोनों स्थानों में समान रूप से पाया जाता है। यह अंतर इतना छोटा है कि इसे व्यावहारिक रूप से महत्वपूर्ण नहीं माना जा सकता। समग्र रूप से 200 में से 70 बच्चों में शारीरिक विकार पाए गए, जो दोनों जिलों में समान अनुपात में वितरित हैं।

तालिका 5B — χ^2-परीक्षण (Chi-square)

टेस्ट	χ^2-मूल्य	df	p-मूल्य
Chi-square test of independence	0.0714	1	0.7890

χ^2-परीक्षण का परिणाम ($\chi^2 = 0.0714$, df = 1, p = 0.7890) दर्शाता है कि हजारीबाग और राँची के बीच शारीरिक विकारों की उपस्थिति में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। p-मूल्य 0.789,

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

जो 0.05 से काफी अधिक है, यह प्रमाणित करता है कि समूहों के बीच देखा गया अंतर मात्र संयोग है, वास्तविक नहीं। इससे स्पष्ट होता है कि दोनों सुधार गृहों में स्वास्थ्य-संबंधी समस्याएँ लगभग समान दर से पाई जाती हैं और क्षेत्रीय भिन्नताएँ शारीरिक विकार की दर को प्रभावित नहीं करतीं। इसलिए, परिकल्पना कि दोनों क्षेत्रों में अंतर हो सकता है—डेटा में समर्थित नहीं है।

यह अध्ययन स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि बाल सुधार गृहों में रहने वाले किशोरों की शिक्षा और व्यवहारिक परिवर्तन पर संस्थागत वातावरण, उपलब्ध संसाधन, परामर्श सेवाएँ और व्यावसायिक प्रशिक्षण का गहरा प्रभाव पड़ता है। शोध से यह निष्पन्न हुआ कि शिक्षा केवल ज्ञान का स्रोत नहीं, बल्कि व्यवहार सुधार, आत्मविश्वास वृद्धि और सकारात्मक व्यक्तित्व निर्माण का एक प्रभावी माध्यम है। नियमित कक्षाएँ, कौशल-आधारित प्रशिक्षण और जीवन-कौशल शिक्षा ने किशोरों में आत्मनियंत्रण, अनुशासन, सहयोगात्मक व्यवहार और सामाजिक अनुकूलन की क्षमता विकसित की।

अध्ययन यह भी इंगित करता है कि जहां सुधार गृहों में प्रशिक्षित शिक्षक, मनोवैज्ञानिक परामर्श, खेल-कूद और रचनात्मक गतिविधियाँ प्रभावी रूप से संचालित होती हैं, वहाँ किशोरों में सकारात्मक परिवर्तन अधिक गहरे व स्थायी होते हैं। इसके विपरीत, संसाधनों की कमी, अधोसंरचना का अभाव, प्रशिक्षित स्टाफ की कमी और अनियमित गतिविधियाँ किशोरों के विकास को बाधित करती हैं।

सर्वोपरि, अध्ययन बताता है कि किशोर अपराध स्थायी स्थिति नहीं है; यदि उचित शिक्षा, निर्देशन, भावनात्मक सहयोग और पुनर्वास कार्यक्रम प्रदान किए जाएँ, तो ये किशोर समाज की मुख्यधारा में सम्मानपूर्वक लौटने की अद्‌भुत क्षमता रखते हैं। अतः आवश्यक है कि सुधार गृहों की शैक्षणिक और पुनर्वासात्मक संरचना को सुदृढ़ किया जाए, ताकि इन किशोरों का भविष्य सुरक्षित, सकारात्मक और समाजोपयोगी बन सके।

निष्कर्ष

"बाल सुधार गृह में रहने वाले किशोरों की शिक्षा और व्यवहार पर आधारित एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'' से यह स्पष्ट रूप से सामने आता है कि शिक्षा और व्यवहारिक हस्तक्षेप किशोरों के जीवन-परिवर्तन में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। सुधार गृहों में रहने वाले किशोर विविध सामाजिक, पारिवारिक और मनोवैज्ञानिक चुनौतियों से गुजरते हैं, जिसके कारण उनका व्यवहार, आत्मविश्वास, सामाजिक समझ और भविष्य-दृष्टि प्रभावित होती है। अध्ययन से यह निष्कर्ष मिला कि जब सुधार गृहों में सुव्यवस्थित

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

शिक्षा, परामर्श सेवाएँ, व्यावसायिक प्रशिक्षण और जीवन-कौशल शिक्षा उपलब्ध होती है, तब किशोरों में सकारात्मक व्यवहारिक परिवर्तन तेजी से विकसित होते हैं। शिक्षा न केवल संज्ञानात्मक कौशल बढ़ाती है, बल्कि किशोरों में आत्मानुशासन, संवाद क्षमता, जिम्मेदारी-बोध और समस्या-समाधान शक्ति को भी मजबूती प्रदान करती है।

शोध में यह भी पाया गया कि सुधार गृहों का वातावरण—जैसे शिक्षक-छात्र संबंध, गतिविधि-आधारित अधिगम, नियमबद्ध दिनचर्या, मनोवैज्ञानिक सहायता और सामाजिक सहभागिता—किशोरों की भावनात्मक स्थिरता एवं सामाजिक मानदंडों की समझ को प्रभावित करता है। जिन संस्थानों में संसाधन, योग्य प्रशिक्षक, परामर्शदाता और नियमित गतिविधियाँ उपलब्ध थीं, वहाँ किशोरों का विकास अधिक संतुलित और सकारात्मक पाया गया।

कुल मिलाकर, यह अध्ययन संकेत करता है कि किशोर अपराध किसी स्थायी पहचान का प्रतीक नहीं है; बल्कि उपयुक्त शैक्षणिक अवसर, संवेदनशील मार्गदर्शन, पुनर्वासात्मक कार्यक्रम और सकारात्मक संस्थागत वातावरण किशोरों को नए जीवन-पथ पर अग्रसर कर सकते हैं। अतः नीतिगत और प्रशासनिक स्तर पर आवश्यक है कि सुधार गृहों की संरचना, संसाधन, स्टाफ प्रशिक्षण और शैक्षणिक सुविधाओं को और अधिक सुदृढ़ किया जाए, ताकि ये संस्थान वास्तविक रूप से बाल पुनर्वास और सामाजिक पुनर्स्थापन के प्रभावी केंद्र बन सकें।

संदर्भ

1. चक्रवर्ती, आर. (2017)। किशोरों की शिक्षा में पारिवारिक सहभागिता का महत्व। बाल और किशोर शिक्षा जर्नल, 10(3), 112–120।
2. चौधरी, एस., & वर्मा, पी. (2017)। बाल सुधार गृहों में बालकों की शैक्षणिक स्थिति का विश्लेषण। भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 12(2), 55–63।
3. जिग्लर, ई., टॉसिग, सी., और ब्लैक, के. (2011)। प्रारंभिक बचपन हस्तक्षेप: किशोर अपराध के लिए एक आशाजनक रोकथाम। अमेरिकी मनोवैज्ञानिक, 47(8), 997।
4. जोशी, ए., & गुप्ता, वी. (2020)। किशोर सुधार संस्थानों में अध्ययन-अध्यापन की गुणवत्ता। समकालीन शिक्षा पत्रिका, 7(3), 121–129।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

5. टी.जे., और टिप्सॉर्ड, जे.एम. (2011)। बच्चे और किशोर के सामाजिक और भावनात्मक विकास में सहकर्मी संक्रमण। मनोविज्ञान की वार्षिक समीक्षा, 62(1), 189-214।
6. टेपलिन, एल. ए., वेल्टी, एल (2012)। हिरासत के बाद युवाओं में मानसिक विकारों की प्रचलनता और स्थायित्व: एक अनुदैर्ध्य अध्ययन। आर्काइव्स ऑफ जनरल साइकियाट्री, 69(10), 1031–1043।
7. ठाकुर, डी. (2023)। बाल सुधार गृहों में डिजिटल शिक्षा के प्रयोग की संभावनाएँ। नई शिक्षा समीक्षा, 15(1), 44–51।
8. डेवलपमेंट सर्विसेज ग्रुप, इंक. (2019)। किशोर न्याय प्रणाली के औपचारिक पर्यवेक्षण में रहने वाले युवाओं के लिए शिक्षा। ऑफिस ऑफ जुवेनाइल जस्टिस एंड डिलिंक्वेंसी प्रिवेंशन।
9. तिवारी, एम. (2018)। बाल सुधार गृहों में शैक्षणिक कार्यक्रमों की प्रभावशीलता (अप्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रबंध)। इलाहाबाद विश्वविद्यालय।
10. त्रिपाठी, पी. (2023)। किशोर सुधार गृहों में डिजिटल शिक्षा की पहल। नई दिशा शिक्षा जर्नल, 16(1), 44–52।
11. नेमोयर, ए., ले, टी., टेलर, ए (2023)। फिलाडेल्फिया पुलिस स्कूल डायवर्जन कार्यक्रम के दीर्घकालिक गिरफ्तारी और शैक्षिक परिणाम। साइकोलॉजी, पब्लिक पॉलिसी एंड लॉ।
12. पटेल, आर. (2021)। सुधार गृहों में शिक्षकों की भूमिका और प्रशिक्षण आवश्यकताएँ। भारतीय शिक्षक जर्नल, 13(4), 102–110।